भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XXI (इक्कीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 10 ओक्टोबर से 16 ओक्टोबर, 2023 तक

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		06	07	08	09	10	12	13	14	15	16
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जींद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	रोहतक	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, 133 से 170 दिन के पश्चात फसल बीजकोष के विकास से लेकर बीजकोष खुलने की अवस्था में है। दूसरी चुनाई प्रगति पर है । कुछ खेतों में मिलीबग की छिटपुट आबादी भी दर्ज की गई। अधिकांश कपास के खेतों में, हरे गुलरों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक है। गुलाबी सूँडी की संख्या ट्रैप में भी बहुत अधिक थीं। गुलरों का सड़ना और खराब खुले गुलरों को भी देखा गया। कुछ खेतों में कपास की पत्ती मोड़ने वाली वायरल बीमारी (कॉटन लीफ कर्ल वायरस रोग), सूटी मोल्ड देखी गई जबकि कई खेतों में मायरोथेसियम/ फंगल पत्ती धब्बा देखा गया।

सिरसा में, फसल बीजकोष बनने और बीजकोष खुलने की अवस्था में है। मौसम गर्म, धूप और उमस भरा था। सिंचाई और दूसरी चुनाई का कार्य अधिकांश स्थानों पर प्रगति पर है । रिपोर्ट किए गए स्थानों पर सफेद मक्खी और जैसिड की संख्या ईटीएल से नीचे हैं और कीटों की आबादी क्रमशः 10.5-12.1 और 1.0-2.5/3 पत्तियों के बीच है। अधिकांश स्थानों पर हरे गुलरों की क्षति (60-80%) के आधार पर गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर गई है। सभी स्थानों पर बोल सड़न की घटनाएं देखी गई। क्षतिग्रस्त और खुले हुए गुलरों में 40-50 प्रतिशत गुलरों में सड़न देखी गई है।

परामर्श:

हिसार में, चूंकि मौसम अनुकूल है, इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे तेज धूप के दौरान कपास की चुनाई शुरू करें। कपास की फसल में एक तिहाई गूलर खुल जाने पर सिंचाई न करें। यदि संभव हो तो गुलाबी सूँडी से संक्रमित कपास को अलग से चुनें और संग्रहित करें। देर से बोई गई कपास की फसल में गुलाबी सूँडी संक्रमण के खिलाफ प्रबंधन के उपाय करें। यदि गुलाबी सूँडी का संक्रमण ईटीएल (5-10% संक्रमित हरे गूलर या लगातार 3 दिनों तक प्रति दिन 8 पतंगे प्रति ट्रेप) पार कर जाता है, तो साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @100 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। संबंधित बॉल रोट के प्रबंधन के लिए, कार्बेन्डाजिम @ 400 ग्राम/ एकड़, कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 500 ग्राम/ एकड़ का छिड़काव करें। मायरोथेशियम लीफ स्पॉट, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट जैसे पर्ण रोगों के प्रबंधन के लिए प्रोपीकोनाज़ोल 2 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% W/W+ डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% W/W एससी @10 मिली या मेटिराम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का पत्तियों पर छिड़काव करें। कम से कम साप्ताहिक अंतराल पर नियमित रूप से खेतों की निगरानी करें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे नियमित रूप से कीट-पतंगों की घटनाओं की निगरानी करें। सूटी फफूंद के विकास के मामले में, प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @1 मिली/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी @2.5 ग्राम/लीटर पानी के 3 रोगनिरोधी/चिकित्सीय छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर दें।यदि 120 दिनों के पश्चात गुलाबी सूँडी, हरे गूलर क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है, तो एथियन 50 ईसी @ 800 मिलीलीटर या साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी

@120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। बॉल रोट को नियंत्रित करने के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डबल्यूपी @ 500 ग्राम/एकड़ या प्रोपिकोनाज़ोल @ 200 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। कूड़े रहित स्वच्छ कपास के चुनाई के दिशानिर्देशों का पालन करें।

कपास उत्पादन तकनीक के संबंध में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन आदि को भाकृअनुप -केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकता है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल विकास चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप -केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है, ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके ।

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XXI (इक्कीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 10 ओक्टोबर से 16 ओक्टोबर, 2023 तक

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		06	07	08	09	10	12	13	14	15	16
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	नागौर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	श्री गंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, 105 से 151 दिन के पश्चात फसल, बीजकोष के विकास और बीजकोष के खुलने की अवस्था में है। अंतरकृषि क्रियाओं का संचालन किया गया है। अधिकांश खेत खरपतवार से मुक्त हैं। जैसिड की संख्या ईटीएल के ऊपर देखी गई और सफेद मक्खी अभी भी ईटीएल से नीचे है। बीमारियों का प्रकोप नहीं है।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, 138 से 180 दिन के पश्चात फसल गूलर फूटने की अवस्था में होती है। कपास की चुनाई प्रगति पर है। किसानों के खेतों में सफेद मक्खी और गुलाबी सूँडी का प्रकोप ईटीएल को पार कर गया। अक्टूबर के दूसरे सप्ताह के दौरान किए गए सर्वेक्षण से जिले में बोंड सड़न की घटनाओं का संकेत मिला।

परामर्श:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में बादल छाए रहने और बारिश नहीं होने का अनुमान है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पूरी तरह से खुले हुए कपास के बीजकोषों की साफ-सुथरी चुनाई करें। यदि संभव हो तो गुलाबी सूँडी से संक्रमित कपास को अलग से चुनें और संग्रहित करें। संक्रमित कपास को आगे फैलने से रोकने के लिए उसे ठीक से संग्रहीत करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण की निगरानी करें और यदि कीटों की संख्या ई टी एल के पार चली जाये तो इसे नियंत्रित करने के लिए डायफेंथियुरोन 50% डब्लूपी @ 600 ग्राम/हैकटैर या फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 200 ग्राम /हैकटैर का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की निगरानी के लिए 8/एकड़ की दर से पीले चिपचिपे जाल लगाएं और गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल लगाएं और बताई गई वैधता के अनुसार लुयर बदलें। नियमित रूप से गुलाबी सुंडी की उपस्थिति की निगरानी हरे गूलर को काट कर उनका अवलोकन करके करें । एक ही कीटनाशक को दोबारा न दोहराएं और जब भी दुबारा छिड़काव की आवश्यकता हो तो , कीटनाशक को बारी-बारी से प्रयोग करें। यदि पौधों की पत्तियाँ अचानक गिरती हैं जो अंततः मुरझा (पैराविल्ट) जाती हैं, तो प्रभावित पौधों को कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डबल्यूपी @2.5 ग्राम/ लीटर पानी में या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @12 ग्राम + यूरिया 100 ग्राम/10 लीटर पानी में इन लक्षणों के दिखने के तुरंत बाद पौधों को भिगोकर बचाएं। मायरोथेसियम, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट, गूलर सड़न रोग और आर्द्र मौसम ब्लाइट जैसे पर्ण रोगों के मामले में, प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55% + पायराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @ 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें। जड़ सड़न से प्रभावित पौधों और आसपास के स्वस्थ पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी या ट्राइकोडर्मा हार्ज़ियानम या टी. विरिडी डब्ल्यूपी फॉर्मूलेशन @ 5 - 6 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएँ। एक ही कीटनाशक/कवकनाशी और एक ही समूह के कीटनाशक/कवकनाशी को दोबारा न दोहराएं। दो या अधिक कीटनाशकों के टैंक मिश्रण से बचें।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। यदि सफेद मक्खी की संख्या ईटीएल को पार कर जाती है तो नियंत्रण के लिए एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिली/एकड़

या फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या थियामेथोक्साम 24 डब्लूजी @ 0.5 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें। यदि सफेद मक्खी के निम्फ की संख्या अधिक है, तो पाइरिप्रोक्सीफेन 10ईसी @ 500 मि.ली./एकड़ का छिड़काव करें। गुलाबी इल्ली की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। नियमित रूप से गुलाबी सूँडी की उपस्थिति की निगरानी करें और जहां भी गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर जाती है तो एथियन 50 ईसी @ 800 मिलीलीटर या साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक का प्रयोग लगातार नहीं करना चाहिए तथा आवश्यकता आधारित छिड़काव को पिछले छिड़काव के 12-15 दिन बाद करना चाहिए। बॉल सड़न और बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग के प्रबंधन के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्लूपी/डब्ल्यूजी @ 25-30 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक के संबंध में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन आदि को भाकृअनुप -केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकता है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल विकास चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप -केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है, ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके ।

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XXI (इक्कीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 10 ओक्टोबर से 16 ओक्टोबर, 2023 तक

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		06	07	08	09	10	12	13	14	15	16
	खरगाँव										
	धार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	खांडवा										
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, फसल 105 से 154 दिन के पश्चात फूल आने, बीजकोष बनने और बीजकोष के खुलने की अवस्था में है। इस अवधि के दौरान में लगभग सभी इलाकों में बारिश नहीं हुई। निराई-गुड़ाई, अंतरकृषि क्रियाएँ, सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग फसल के चरणों के अनुसार किया गया है। खेत खरपतवार से ग्रस्त हैं। कुछ इलाकों में पोटैशियम की कमी दर्ज की गई है। कुछ खेतों में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट सर्कोस्पोरा और अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट देखे गए।

परामर्श:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे 120 दिन बाद 10% नाइट्रोजन के साथ क्रमशः 150:75:40 किलोग्राम एनपीके प्रति हेक्टेयर की दर से रासायनिक उर्वरक डालें। नाइट्रोजन की विभाजित खुराकें कॉलम विधि द्वारा 10 से 15 सेमी की गहराई पर डालनी चाहिए। यदि खेतों में अचानक सूखने या पैराविल्ट के लक्षण दिखाई देते हैं, तो प्रभावित पौधों के चारों ओर तुरंत कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @12 ग्राम + + यूरिया 150 ग्राम मिश्रण को प्रति 10 लीटर पानी के साथ डालें। गुलाबी सूँडी की गतिविधि की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें। यदि गुलाबी सूँडी ईटीएल से अधिक हो तो प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। जहां फसल की अवस्था 120 दिन की हो, वहां साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। बैक्टीरियल ब्लाइट रोग के प्रबंधन के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी/डब्ल्यूजी @25-30 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें। कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या क्रेसोक्सिम मिथाइल 44.3 एससी @ 10 मिली या प्रोपीनेब 70 डबल्यूपी @25 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या मेटिरम 55% +पाइराक्लोस्ट्रोबिन5% डबल्यूजी @20 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम को 10 लीटर पानी में मिलाएं एवं सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा, मायरोथेसियम लीफ स्पॉट, कोरिनेप्सोरा पत्ती धब्बा, अन्य फफूंद पत्ती धब्बों और फफूंद बोल सड़न रोगो के खिलाफ खेतो में पत्तियों पर छिड़काव करें। कपास चुनते समय उचित सावधानी बरतनी चाहिए। तेज धूप में ओस सूखने के बाद ही कपास की चुनाई शुरू करनी चाहिए। आंशिक रूप से खुले, अविकसित बीजकोष या नमी वाले बीजकोषों से कपास की चुनाई नहीं करनी चाहिए। कपास चुनने के बाद उसे साफ कपड़े या तिरपाल पर रखना चाहिए। कपास चुनते समय सूखी पत्तियों के टुकड़े, डंठल और मिट्टी को कपास में मिलाने से बचें। इससे कपास के रेशे की मात्रा ख़राब हो जाएगी। नमी की मात्रा कम करने के लिए कपास को धूप में फैलाना चाहिए। अधिक नमी कपास के रेशे के साथ-साथ बीज की गुणवत्ता को भी नुकसान पहुँचाती है। बाद में आवश्यकता के अनुसार चुनी हुई कपास का संग्रहण करें। कपास के रेशे के भंडारण करते समय कुछ सावधानियों का पालन किया जाना चाहिए। भण्डार गृह हवादार एवं पक्का होना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो कपास के भंडारण करने से पहले भंडार गृह का धूम्रीकरण किया जाना चाहिए। भंडारण से पहले कपास को ठीक से सुखा लेना चाहिए। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खेतों में कपास के डंठल के ढेर लगाने से बचें।

कपास उत्पादन तकनीक के संबंध में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन आदि को भाकृअनुप -केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकता है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल विकास चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप -केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है, ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके ।